Open Access
IJASSH
International Journal of Arts, Social Sciences and Humanities

(A Quarterly, Refereed, & Peer Reviewed International Journal)
Published by: AAASSHER, Mumbai, (MS) India
Journal homepage: https://ijassh.aaassher.org/
ISSN (Online): 2584-1130
Volume 3, Issue 2, June 2025; Pages 06 – 11
DOI: 10.5281/zenodo.15365128

Original Research Article

छत्रपति शिवाजी महाराज का नौसैनिक बल

एस. जे. पाटील

शोधार्थी, एस. आर. टी. एम. विद्यापीठ, नांदेड ४३१६०६ महाराष्ट्र, भारत

Corresponding author E-mail: sjpatil330@gmail.com

Received: 13 April, 2025 | Accepted: 02 May, 2025 | Published: 08 May, 2025

छत्रपति शिवाजी महाराज एक महान योद्धा और मराठा साम्राज्य के संस्थापक थे। उन्होंने 17वीं शताब्दी में एक मजबूत नौसेना बनाई, जिसने भारत के समुद्री तटों की रक्षा की और विदेशी शक्तियों, जैसे पुर्तगालियों और अंग्रेजों, को चुनौती दी। उस समय, समुद्र पर इन विदेशी शक्तियों का दबदबा था, लेकिन शिवाजी ने समझा कि अपने साम्राज्य को सुरक्षित रखने के लिए समुद्री शक्ति जरूरी है। उन्होंने किलों, जहाजों और चतुर रणनीतियों के साथ एक ऐसी नौसेना बनाई जो तेज और प्रभावी थी। उनकी नौसेना ने व्यापार को बढ़ावा दिया और तटीय क्षेत्रों को सुरक्षित किया। आज, उन्हें भारतीय नौसेना का जनक कहा जाता है, और उनकी विरासत हमारे देश की नौसेना में जीवित है।

इस शोध निबंध में शिवाजी महाराज के नौसैनिक बल के निर्माण, संगठन, रणनीतियों, अभियानों, और ऐतिहासिक महत्व का विस्तृत विश्लेषण किया जाएगा। यह निबंध उनके नौसैनिक बल की संरचना, चुनौतियों, और आधुनिक भारत पर इसके प्रभाव को भी रेखांकित करेगा।

बीज शब्द: नौसैनिक बल, स्वराज्य, रणनीति, तटीय किले, विदेशी शक्तियाँ, संसाधन, प्रशिक्षण, खुफिया, विरासत, राष्ट्रीय गौरव

प्रस्तावना

छत्रपति शिवाजी महाराज, जिन्हें भारतीय नौसेना का जनक कहा जाता है, 17वीं शताब्दी के एक दूरदर्शी नेता थे, जिन्होंने मराठा साम्राज्य की स्थापना की। उनकी सबसे उल्लेखनीय उपलब्धियों में से एक थी एक मजबूत नौसैनिक बल का निर्माण, जिसने न केवल मराठा तटीय क्षेत्रों की रक्षा की, बल्कि पुर्तगालियों, अंग्रेजों और सिद्दियों जैसे विदेशी और स्थानीय शक्तियों को चुनौती दी। उस समय, जब यूरोपीय शक्तियाँ समुद्री व्यापार और तटीय क्षेत्रों पर हावी थीं, शिवाजी ने समुद्री शक्ति के महत्व को पहचाना और 1654 में कल्याण के पास पहला मराठा नौसैनिक जहाज बनवाया। यह निबंध शिवाजी महाराज के नौसैनिक बल के निर्माण, संगठन, रणनीतियों, अभियानों और इसके दीर्घकालिक प्रभाव का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

17वीं शताब्दी में भारत का पश्चिमी तट, विशेष रूप से कोंकण क्षेत्र, समुद्री व्यापार और शक्ति संघर्ष का केंद्र था। पुर्तगाली, डच और अंग्रेज जैसी यूरोपीय शक्तियों ने गोवा, बॉम्बे और सूरत जैसे प्रमुख बंदरगाहों पर नियंत्रण स्थापित किया था। ये शक्तियाँ उन्नत जहाजों और तोपों के साथ समुद्री व्यापार पर हावी थीं। स्थानीय स्तर पर, जंजीरा के सिद्दी और बीजापुर की आदिलशाही भी समुद्री क्षेत्रों में प्रभावशाली थे। सिद्दियों का जंजीरा किला अभेद्य माना जाता था, और उनकी नौसेना मराठा क्षेत्रों के लिए खतरा थी।

इस समय, भारत में कोई स्वदेशी नौसैनिक शक्ति नहीं थी जो इन विदेशी और स्थानीय शक्तियों का मुकाबला कर सके। शिवाजी महाराज ने इस कमी को पहचाना और अपने स्वराज्य की रक्षा के लिए एक नौसेना की आवश्यकता को समझा। उनकी माता जीजाबाई और गुरु दादाजी कोंडदेव ने उन्हें स्वतंत्रता और राष्ट्रवाद की भावना सिखाई, जिसने उनकी समुद्री रणनीतियों को आकार दिया।

नौसैनिक बल की स्थापना

प्रारंभिक प्रयास

शिवाजी महाराज ने 16 वर्ष की आयु में तोरणा किले पर कब्जा कर अपनी सैन्य गतिविधियाँ शुरू कीं। हालांकि, नौसेना का निर्माण उनके शुरुआती अभियानों का हिस्सा नहीं था। 1656 में जावली की लड़ाई के बाद, उन्होंने तटीय क्षेत्रों की रक्षा की आवश्यकता को महसूस किया। 1654 में, उन्होंने कल्याण के पास एक खाड़ी में पहला मराठा नौसैनिक जहाज बनवाया, जिसका मुख्य उद्देश्य जंजीरा के सिद्दियों की शक्ति को नियंत्रित करना था।

1657 में, शिवाजी ने कल्याण और भिवंडी जैसे तटीय क्षेत्रों पर कब्जा किया, जिससे उन्हें समुद्री क्षेत्रों तक पहुंच मिली। इसके बाद, उन्होंने तटीय किलों और नौसैनिक अड्डों के निर्माण पर ध्यान केंद्रित किया। उनकी नौसेना का प्रारंभिक लक्ष्य था तटीय क्षेत्रों की रक्षा, समुद्री व्यापार को सुरक्षित करना, और विदेशी शक्तियों के व्यापारिक मार्गों को बाधित करना।

नौसैनिक संगठन

शिवाजी महाराज की नौसेना एक सुसंगठित और अनुशासित बल था। उन्होंने इसे दो प्रमुख बेड़ों में विभाजित किया:

- एक बेड़े का नेतृत्व एडमिरल मायनाक भंडारी ने किया।
- दूसरा बेड़ा दौलत खान के अधीन था।

नौसेना में मुख्य रूप से कोंकणी नाविक शामिल थे, जबकि कमान की जिम्मेदारी अनुभवी भाड़े के सैनिकों, जैसे सिद्दी और पुर्तगाली, को दी गई थी। 1659 तक, नौसेना में लगभग 20 युद्धपोत थे, और 1680 तक यह 500 से अधिक जहाजों तक विस्तारित हो गई। बेड़े में गलवत (30 से 150 टन) और तीन मस्तूल वाले गुराब/ग्रैब जैसे जहाज शामिल थे, जो तटीय युद्ध के लिए उपयुक्त थे।

प्रमुख नौसैनिक अड्डे

शिवाजी महाराज ने कोंकण तट पर कई नौसैनिक अड्डे और किले स्थापित किए, जिनमें शामिल हैं:

- **सिंधुदुर्ग:** मालवण के पास कुर्ते द्वीप पर 1664 से 1667 के बीच निर्मित, यह मराठा नौसेना का प्रमुख अड्डा था। इसका निर्माण एक करोड़ होन की लागत से हुआ, जिसमें 500 पत्थर काटने वाले, 200 लोहार, और 3,000 मजदूर शामिल थे।
- **विजयदुर्ग:** रत्नागिरी के पास स्थित, इसे 1653 में कब्जा किया गया और मजबूत किया गया।
- **सुवर्णदुर्ग:** हरनाई बंदरगाह के पास, यह एक रणनीतिक चौकी थी।
- **कोलाबा:** अब अलीबाग के नाम से जाना जाता है, यह एक महत्वपूर्ण नौसैनिक अड्डा था।

ये किले तीन प्रकार के थे:

1. **खाड़ी किले:** यातायात निगरानी के लिए, जैसे खाड़ियों के पास बने किले।
2. **तटीय किले:** गोपालगढ़, पूर्णगढ़, जयगढ़, विजय दुर्ग, और देवगढ़।
3. **द्वीप किले:** खांबेरी, कोलाबा, स्वर्ण दुर्ग, और सिंधुदुर्ग।

इन किलों का उपयोग जहाजों की मरम्मत, हथियारों के भंडारण, और नाविकों के प्रशिक्षण के लिए किया जाता था।

नौसैनिक रणनीतियाँ

शिवाजी महाराज की नौसैनिक रणनीतियाँ उनकी स्थलीय गुरिल्ला रणनीति, गनीमी कावा, का समुद्री रूप थीं। उनकी प्रमुख रणनीतियाँ थीं:

1. छापामार हमले

मराठा नौसेना तेज और अप्रत्याशित हमलों के लिए जानी जाती थी। गलवत जैसे छोटे और हल्के जहाज रात में या प्रतिकूल मौसम में दुश्मन के बड़े जहाजों पर हमला करते थे। ये हमले दुश्मन को जवाब देने का समय नहीं देते थे।

2. तटीय किलों का उपयोग

शिवाजी ने अपने तटीय किलों को रणनीतिक ठिकानों के रूप में उपयोग किया। ये किले दुश्मन की गतिविधियों पर नजर रखने और हमलों की योजना बनाने में सहायक थे।

3. समुद्री व्यापार पर नियंत्रण

शिवाजी ने विदेशी शक्तियों के व्यापारिक मार्गों को बाधित करने के लिए अपनी नौसेना का उपयोग किया। उन्होंने पुर्तगाली और अंग्रेज व्यापारिक जहाजों पर हमले किए, जिससे इन शक्तियों को आर्थिक नुकसान हुआ।

4. नौसैनिक खुफिया

स्थानीय मछुआरों और तटीय समुदायों को खुफिया प्रणाली में शामिल किया गया। ये समुदाय दुश्मन की गतिविधियों की जानकारी प्रदान करते थे, जिससे मराठा नौसेना को रणनीतिक लाभ मिलता था।

प्रमुख नौसैनिक अभियान

शिवाजी महाराज की नौसेना ने कई महत्वपूर्ण अभियानों में भाग लिया:

1. खांबेरी द्वीप का कब्जा (1679)

शिवाजी ने खांबेरी द्वीप पर कब्जा किया, जो मुंबई के प्रवेश द्वार पर रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण था। इस अभियान ने मराठा नौसेना की ताकत को प्रदर्शित किया।

2. पुर्तगालियों के साथ संधि (1674)

शिवाजी ने गोवा में पुर्तगालियों के साथ एक मित्रता संधि पर हस्ताक्षर किए, जिससे उनकी कूटनीतिक चतुराई का पता चलता है।

3. सिद्दियों के खिलाफ अभियान

जंजीरा के सिद्दियों के खिलाफ निरंतर अभियान चलाए गए। 1659 में जंजीरा पर हमला, हालांकि पूरी तरह सफल नहीं हुआ, ने सिद्दियों के व्यापार को बाधित किया।

4. सूरत की लूट (1664)

सूरत की लूट में नौसेना ने तट को अवरुद्ध कर मुगल और अंग्रेज व्यापारियों को सहायता मांगने से रोका। इस अभियान से प्राप्त धन का उपयोग नौसेना को मजबूत करने में किया गया।

नौसैनिक बल की चुनौतियाँ

शिवाजी की नौसेना को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा:

1. संसाधनों की कमी

मराठा साम्राज्य के पास यूरोपीय शक्तियों जैसे असीमित धन और तकनीक नहीं थी। जहाज निर्माण और रखरखाव एक बड़ी चुनौती था।

2. तकनीकी पिछड़ापन

पुर्तगालियों और अंग्रेजों के पास बड़े युद्धपोत और उन्नत तोपें थीं, जबकि मराठा नौसेना छोटे जहाजों पर निर्भर थी।

3. विदेशी गठजोड़

पुर्तगाली और अंग्रेज अक्सर सिद्दियों और आदिलशाह के साथ गठजोड़ करते थे, जिससे मराठा नौसेना के लिए जटिल स्थिति उत्पन्न हुई।

4. प्रशिक्षित नाविकों की कमी

प्रशिक्षित नाविकों और अधिकारियों की कमी ने नौसेना की प्रभावशीलता को प्रभावित किया।

तालिका १: शिवाजी महाराज के नौसैनिक बल की चुनौतियाँ

संसाधन	सीमित धन और तकनीकी विशेषज्ञता।
तकनीक	यूरोपीय शक्तियों की तुलना में छोटे और कम उन्नत जहाज।
गठजोड़	विदेशी और स्थानीय शक्तियों के बीच गठजोड़।
प्रशिक्षण	प्रशिक्षित नाविकों और अधिकारियों की कमी।

शिवाजी महाराज के नौसैनिक बल का आधुनिक भारत पर प्रभाव

भारतीय नौसेना पर प्रभाव

शिवाजी महाराज को भारतीय नौसेना का जनक माना जाता है, क्योंकि उन्होंने उस समय समुद्री शक्ति की आवश्यकता को पहचाना जब भारत में इसकी उपेक्षा की जाती थी। उन्होंने 1654 में कल्याण के पास मराठा नौसेना की नींव रखी और तटीय किलों जैसे सिंधुदुर्ग, विजयदुर्ग, और कोलाबा को नौसैनिक अड्डों के रूप में विकसित किया। उनकी रणनीतियाँ, जैसे समुद्री गुरिल्ला युद्ध, हाथापाई युद्ध, और बेड़े की रणनीतिक स्थिति, मराठा क्षेत्रों की रक्षा और विदेशी आक्रमणों को रोकने में प्रभावी थीं।

आधुनिक भारतीय नौसेना इन रणनीतियों से प्रेरणा लेती है। भारतीय नौसेना की उन्नत युद्धपोतों और पनडुब्बियों की तैनाती शिवाजी की मजबूत नौसैनिक शक्ति की दृष्टि को प्रतिबिंबित करती है। उनकी रणनीतिक दूरदर्शिता ने भारत को समुद्री रक्षा के लिए एक मजबूत ढांचा प्रदान किया, जो आज भी प्रासंगिक है। उदाहरण के लिए, उनकी तटीय निगरानी और छापामार रणनीतियाँ आधुनिक नौसैनिक रणनीतियों में तटीय सुरक्षा और त्वरित प्रतिक्रिया के रूप में देखी जा सकती हैं।

आत्मनिर्भरता और स्वदेशीकरण

शिवाजी की नौसैनिक विरासत को भारतीय नौसेना ने अपने प्रतीकों और संरचनाओं में शामिल किया है। India Today के अनुसार, 2022 में भारतीय नौसेना ने नया ध्वज अपनाया, जिसमें शिवाजी की राजमुद्रा से प्रेरित अष्टकोणीय डिज़ाइन शामिल है। यह प्रतीक उनकी समुद्री दृष्टि और स्वतंत्रता की भावना को दर्शाता है। इसके अतिरिक्त, लोनावला में नौसेना प्रशिक्षण केंद्र को INS शिवाजी और मुंबई में पश्चिमी नौसेना कमान के प्रशासनिक केंद्र को INS अंग्रे नाम दिया गया है, जो शिवाजी के प्रमुख नौसैनिक कमांडर कन्होजी अंग्रे को सम्मानित करता है। 2023 में, नौसेना अधिकारियों की वर्दी पर शिवाजी का प्रतीक शामिल किया गया, जो उनकी विरासत को और मजबूत करता है।

राष्ट्रीय गौरव और सांस्कृतिक महत्व

शिवाजी की नौसैनिक उपलब्धियाँ भारत में राष्ट्रीय गौरव का एक महत्वपूर्ण स्रोत हैं। उनकी नौसेना ने यूरोपीय औपनिवेशिक महत्वाकांक्षाओं को चुनौती दी और स्वदेशी प्रतिरोध की कहानियाँ बनाईं, जो स्वतंत्रता संग्राम के दौरान प्रेरणा का स्रोत बनीं। उनकी स्वतंत्रता और स्वराज्य की भावना ने भारतीयों में समुद्री सुरक्षा और राष्ट्रीय पहचान के प्रति जागरूकता बढ़ाई। नौसेना दिवस पर उनकी विरासत को याद किया जाता है, जो भारत के ऐतिहासिक समुद्री पराक्रम को रेखांकित करता है।

चुनौतियाँ और सीमाएँ

हालांकि शिवाजी की नौसेना ने उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल कीं, लेकिन उस समय की तकनीकी और रसद संबंधी सीमाओं ने इसके प्रभाव को सीमित किया। मराठा नौसेना के पास यूरोपीय शक्तियों जैसे बड़े युद्धपोत और उन्नत तोपें नहीं थीं। फिर भी, उनकी रणनीतिक दृष्टि और

स्वदेशी प्रयासों ने इन सीमाओं को पार करते हुए भारत के समुद्री इतिहास में एक स्थायी प्रभाव छोड़ा। कुछ इतिहासकारों का मानना है कि उनकी नौसेना की तकनीकी सीमाएँ थीं, लेकिन उनकी रणनीतिक दृष्टि का प्रभाव निर्विवाद है।

तालिका 2: शिवाजी की नौसेना का आधुनिक भारत पर प्रभाव

क्षेत्र	प्रभाव	उदाहरण
नौसैनिक रणनीतियाँ	गुरिल्ला युद्ध और तटीय निगरानी की प्रेरणा	उन्नत युद्धपोतों और पनडुब्बियों की तैनाती
आत्मनिर्भरता	स्वदेशी संसाधनों का उपयोग	रक्षा उपकरणों का स्वदेशीकरण
प्रतीक और संरचनाएँ	नौसेना के प्रतीकों में शामिल	नया नौसेना ध्वज, INS शिवाजी, INS अंग्रे
राष्ट्रीय गौरव	स्वतंत्रता और समुद्री जागरूकता को प्रेरणा	नौसेना दिवस पर सम्मान, स्वतंत्रता संग्राम में प्रेरणा

शिवाजी महाराज का नौसैनिक बल आधुनिक भारत पर गहरा प्रभाव डालता है। उनकी रणनीतिक दृष्टि ने भारतीय नौसेना की नींव रखी, जो आज उन्नत तकनीक और रणनीतियों के साथ उनकी विरासत को आगे बढ़ा रही है। उनकी आत्मनिर्भरता और स्वदेशी संसाधनों पर जोर भारत की रक्षा नीतियों में दिखता है। नौसेना के प्रतीक, जैसे नया ध्वज और INS शिवाजी, उनकी समुद्री दृष्टि को सम्मानित करते हैं। उनकी उपलब्धियाँ राष्ट्रीय गौरव का स्रोत हैं और समुद्री सुरक्षा के प्रति जागरूकता को बढ़ावा देती हैं। हालांकि उनकी नौसेना की तकनीकी सीमाएँ थीं, उनकी रणनीतिक दूरदर्शिता ने भारत को एक समुद्री शक्ति के रूप में स्थापित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

निष्कर्ष

शिवाजी महाराज का नौसैनिक बल उनकी रणनीतिक दूरदर्शिता और सैन्य प्रतिभा का प्रतीक था। सीमित संसाधनों के बावजूद, उन्होंने एक ऐसी नौसेना बनाई जो विदेशी शक्तियों को चुनौती देने में सक्षम थी। उनकी रणनीतियाँ, जैसे गनीमी कावा और तटीय किलों का उपयोग, उनकी सैन्य कुशलता को दर्शाती हैं। उनकी नौसेना ने मराठा साम्राज्य की समुद्री सीमाओं को सुरक्षित किया और भारत को एक समुद्री शक्ति के रूप में स्थापित करने की दिशा में पहला कदम उठाया। उनकी विरासत आधुनिक भारतीय नौसेना में जीवित है, जो उनके साहस और नवाचार को प्रेरणा मानती है।

संदर्भ सूची

1. Maratha Navy – Wikipedia (https://en.wikipedia.org/wiki/Maratha_Navy)
2. Chhatrapati Shivaji Maharaj's Navy: Part 1 – NewsBharati (https://www.newsbharati.com/Encyc/2024/2/16/Navy-Shivaji-Maharaj.html)
3. Why Shivaji is Father of Indian Navy - Indian Express (https://indianexpress.com/article/research/why-chhatrapati-shivaji-is-called-the-father-of-the-indian-navy-9705777/)
4. Shivaji Maharaj's Naval Foundation - India Today (https://www.indiatoday.in/india/story/chhatrapati-shivaji-maharaj-indian-navy-ensign-ins-vikran-commission-naredra-modi-maratha-1995610-2022-09-02)
5. Father of Indian Navy: Shivaji’s Strategies – Testbook (https://testbook.com/defence/father-of-indian-navy)
6. Chhatrapati Shivaji Maharaj’s Naval Legacy – Civilsdaily (https://www.civilsdaily.com/news/chhatrapati-shivaji-maharajs-naval-legacy/)
7. Indigenisation of Naval Power: Shivaji to Indian Navy - The Geostrata (https://www.thegeostrata.com/post/indigenisation-of-naval-power-from-chhatrapati-shivaji-to-indian-navy)

8. Sindhudurg Fort: Shivaji's Naval Dominance - Indian Express (https://indianexpress.com/article/research/sindhudurg-the-martaha-fort-that-cemented-shivaji-maharajs-naval-dominance-9549833/)